प्रातः क्लास 16/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। यह तो रूहानी बच्चे जानते हैं कि बाप आए हैं हमको नई दुनिया का वर्सा देने। यह तो बच्चों को पक्का है ना। जितना हम बाप को याद करेंगे उतना ही पवित्र बनेंगे। जितना हम अच्छा टीचर बनेंगे उतना ही हम ऊँच पद पावेंगे; क्योंकि आपस में भाई–2 हो। टीचर के रूप में पढ़ाना भी सीखते हो। तुमको फिर औरों को पढ़ाना भी ज़रूर है; क्योंकि तुम पढ़ाने वाले टीचर ज़रूर बनते हो। बाकी तुम किसका गुरु नहीं बन सकते हो। सिर्फ टीचर बन सकते हो। गुरु तो एक ही सद्गुरु है, वही सिखाते हैं। सर्व का सद्गुरु एक ही है। वह टीचर बनाते हैं। तुम सभी को पढ़ाते रास्ता बताते रहो मन्मनाभव का। बाप ने तुम्हारे पर ड्यूटी रखी है–मुझे याद करते रहो और फिर टीचर भी बनो। तुम किसको बाप का परिचय देते हो तो उनका भी फर्ज है बाप को याद करना। टीचर रूप में सृष्टिचक्र की नॉलेज देनी पड़ती है। बाप को तो ज़रूर याद करना पड़े। बाप की याद से ही पाप मिट जाने हैं। बच्चे जानते हैं हम पापात्मा हैं। इसलिए बाप सभी को कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे पाप मिट जावेंगे। युक्ति बताते हैं मीठे बच्चे तुम्हारी आत्मा पतित बनी है जिस कारण शरीर भी पतित बना है। पहले तुम पवित्र थे, अभी अपवित्र बने हो। अभी पतित से पावन होने की युक्ति तो बहुत ही सहज बताते हैं। बाप को याद करो तो तुम पवित्र बन जावेंगे। उठते–बैठते–चलते बाप को याद करो। वह लोग तो गंगा स्नान करते हैं तो गंगा को याद करते हैं, समझते हैं वह पतित–पावनी है। गंगा को याद करने से पावन बन जाना है; परन्तु बाप कहते हैं कोई भी पावन बन नहीं सकते। पानी से कैसे पावन बनेंगे? बाप कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ। हे बच्चों देह सहित देह के सभी धर्मों को छोड़ मुझे याद करने से तुम पावन बन जावेंगे, फिर से अपने घर मुक्तिधाम पहुँच जावेंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं उनके लिए यह महामंत्र है। इनसे तुम अपने घर पहुँच जावेंगे। सारा कल्प घर को भूले हो। बाप को सारा कल्प कोई जानता ही नहीं। एक ही बार बाप खुद आकर अपना परिचय देते हैं इस मुख द्वारा। इस मुख की कितनी महिमा है। गऊमुख कहते हैं ना। वह गऊ तो जानवर है। यह है मनुष्य की बात। तुम जानते हो यह बड़ी माता है, जिस माता द्वारा शिवबाबा तुम सभी को एडॉप्ट करते हैं। तुम अभी बाबा कहने लग पड़े हो। बाप भी कहते हैं इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप भी कट जानी है। बच्चों को बाप याद पड़ जाता है ना। उनकी सिकल आदि दिल पर बैठ जाती है। तुम बच्चे जानते हो जैसे हम आत्मा हैं वैसे वह परम–आत्मा है। सिकल में और कोई फर्क नहीं है। शरीर के संबंध में तो फीचर्स आदि अलग–2 होते हैं। बाकी आत्मा तो एक ही है। जैसे आत्मा हमारी है वैसे बाप भी परम–आत्मा है। तुम बच्चे जानते हो बाप परमधाम में रहते हैं। हम भी परमधाम में रहते हैं। बाबा की आत्मा और हमारी आत्मा में कोई फर्क नहीं है। वह भी बिन्दी है, हम भी बिन्दी हैं। यह ज्ञान और कोई को नहीं है। तुमको भी बाप ने बताया है। बाप के लिए भी क्या–2 कह देते हैं। सर्वव्यापी है, पत्थर–भित्तर में है, जिसको जो आता है वह कह देते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार भक्तिमार्ग में बाप के नाम–रूप, देश–काल को भूल जाते हैं, तुम भी भूल जाते हो। बच्चा बाप को भूल जाता है तो बाकी क्या जानेंगे। गोया निर्धन के हो गए। धणी को याद करते ही नहीं हैं। धणी के पार्ट को ही नहीं जानते हैं। अपन को भी भूल जाते हैं। बाप को भी भूल जाते हैं तो सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त को भी भूल जाते हैं। अभी तुम अच्छी रीत जानते हो बरोबर हम भूल गए थे। जानवर मिसल बन गए थे। हम तो पहले ऐसे देवी–देवता थे। अभी जानवर से भी बदतर हो पड़े हैं। मुख्य बात तो हम अपनी आत्मा को भी भूल गए हैं। तो बाप को भी भूल गए हैं। अभी रियलाइज़ कौन करावे? कोई भी जीवात्मा को यह पता नहीं होगा कि हम आत्मा क्या हैं, कैसे सारा पार्ट बजाती हैं। हम सभी भाई–2 हैं। यह ज्ञान और कोई में भी नहीं है। इस समय सारी सृष्टि ही तमोप्रधान हो चुकी है। ज्ञान नहीं है, ग्लानि है। तुम्हारे में अभी ज्ञान है तो ग्लानि बन्द हो गई है। बुद्धि में आया हम आत्मा इतना समय बाप की ग्लानि करते आए, ग्लानि करने से दूर होते जाते हैं। हम आत्माओं ने बाप की बहुत ग्लानि की है ड्रामा के प्लैन अनुसार; इसलिए सीढ़ी नीचे उतरते गए हैं। यह

समझ अभी बुद्धि में आई है फिर कब कोई फालतू प्रश्न पूछ नहीं स(कते) हैं। मूल बात हो जाती है बाप को याद करने की। बाप और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ बाप को याद करने की तकलीफ है। बाप कब बच्चों को कोई तकलीफ दे सकते हैं क्या? लॉ नहीं कहता। बाप कहते हैं मैं कोई भी तकलीफ नहीं देता हूँ। कुछ भी प्रश्न आदि पूछते हैं, कहता हूँ इन बातों में टाइम वेस्ट क्यों करते हो। बाप को याद करो। मैं आया हूँ तुमको ले जाने। इसलिए तुम बच्चों को याद की यात्रा से पावन बनना है। बस। मैं ही पतित–पावन बाप हूँ। मुख से कहता हूँ एक ही बात। एक ही बात से तुम्हारा बेड़ा पार हो जाता है। प्रश्न–उत्तर में क्यों टाइम वेस्ट करते हो। बाप युक्ति बताते हैं कहाँ भी जाओ बाप को याद करना है, तो पाप कट जाए। 84 का राज़ भी बाप ने समझा दिया है। मुझे याद करो, जिसके लिए ही बुलाया है। अभी यह अपनी जाँच करनी है हम कहाँ तक बाप को याद करते हैं। बस और कोई तरफ का विचार नहीं करना है। यह तो बहुत सहज है बाप को याद करना। बच्चा थोड़ा बड़ा होता है तो ऑटोमैटिकली माँ–बाप को याद करने लग पड़ते हैं। तुम भी समझो हम आत्मा बाप के बच्चे हैं। याद क्यों करना पड़ता है; क्योंकि हमारे ऊपर जो पाप चढ़े हुए हैं वह इस याद से ही खत्म होंगे। इसलिए ज्ञान भी एक गायन भी है एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति। जीवनमुक्ति पढ़ाई पर मदार रखती है। जितना तुम बाप को याद करेंगे उतना ही ऊँच नम्बर का मर्तबा पावेंगे। धंधा आदि तो भल करो, बाप कोई मना नहीं करते हैं। धंधा आदि जो तुम करते हो वह भी दिन–रात याद रहता है ना। तो बाप अभी यह रूहानी धंधा देते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो और 84 के चक्र को याद करो। मुझे याद करने से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। यह भी समझते हो अभी पुराना चोला है फिर सतोप्रधान नया चोला मिलेगा। अपने पास बुद्धि में तन्त रखना है जिससे बहुत फायदा होना है। जैसे स्कूल में सबजेक्ट तो बहुत होती है फिर भी इंग्लिश पर नम्बर अच्छे होते हैं; क्योंकि इंगलिश भी है भाषा। उन्हों का पहले राज्य था इसलिए वह जास्ती चलती है। अभी भी भारतवासी कर्जदार हैं। भल कोई कितने भी धनवान हैं; परन्तु बुद्धि में यह तो है ना हमारे राज्य के जो हेड्स हैं वह कर्जदार हैं। गोया हम भारतवासी कर्जदार हैं। रयैत ज़रूर कहेंगे ना हम कर्जदार हैं। यह भी समझ चाहिए ना, जबकि तुम राजाई स्थापन कर रहे हो। तुम जानते हो हम अभी इन सब कर्ज आदि से छूटकर सॉलवेन्ट बनते हैं। फिर आधा कल्प हम कोई से भी कर्जा उठाने वाले नहीं हैं। कर्जदार पतित दुनिया के मालिक हैं। अभी हम कर्जदार भी हैं, पतित दुनिया के मालिक हैं। हमारा भारत ऐसा है गाते हैं ना। तुम बच्चे जानते हो हम बहुत साहुकार थे, परिजाद–परिजादियाँ थे। यह याद रहता है हम ऐसे विश्व के मालिक थे। अभी बिल्कुल कर्जदार और डर्टी भी बन गए हैं। यह खेल का रिजल्ट बाप बता रहे हैं। रिजल्ट क्या हुई है तुम बच्चों को अभी स्मृति में है। सतयुग में हम कितने साहुकार थे। किसने तुमको साहुकार बनाया? बच्चे कहेंगे– बाबा, आपने हमको इतना साहुकार बनाया था। एक बाप ही साहुकार बनाने वाला है। दुनिया इन बातों को नहीं जानती है। लाखों वर्ष कह देने से सभी भूल गए हैं। कुछ नहीं जानते हैं। तुम अभी सभी कुछ जान गए हो। हम पद्मापदम साहुकार थे। बहुत पवित्र सुखी थे। वहाँ झूठ, पाप आदि कुछ होता नहीं। सारे विश्व पर तुम्हारी जीत थी। गायन भी है शिवबाबा आप जो देते हो, और कोई दे नहीं सकता, कोई की ताकत नहीं जो आधा कल्प का सुख दे सके। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में भी तुमको बहुत सुख, अथाह धन रहता है। कितने हीरे–जवाहर आदि रहते हैं जो फिर पिछाड़ी वालों के हाथ आते हैं। अभी तो वह चीज़ देखने में भी नहीं आती। तुम फर्क देखते हो ना। तुम ही पूज्य देवी–देवता थे। फिर तुम्हीं पुजारी बने हो। आपे ही पूज्य,..... तुम ही पूज्य से फिर पुजारी बन जाते हो। बाप कोई पुजारी नहीं बनते हैं; परन्तु पुजारी दुनिया में तो आते हैं ना। बाप तो एवर पूज्य है। वह कब पुजारी होता नहीं। उनका धंधा है तुमको पुजारी से पूज्य बनाना। रावण का काम है तुमको पुजारी बनाना। यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है। तुम भी भूल जाते हो। रोज़–2 बाप समझाते रहते ....। बाप के हाथ में है चाहे किसको साहुकार बनावे, चाहे गरीब बनावे। बाप कहते हैं जो साहुकार हैं उन्हों को गरीब ज़रूर बनाता हूँ। बनेंगे ही। उन्हों का पार्ट ऐसा है, कब ठहर न सके। धनवान को अहंकार बहुत रहता

है। मैं फलाना हूँ, यह यह हमको है। घमंड तोड़ने लिए बाबा कहते हैं, यह जब आवेंगे कुछ देने लिए, तो बाबा कहेंगे, दरकार नहीं है। यह अपने पास रखो। जब जरूरत होगी तो फिर ले लेंगे; क्योंकि देखते हैं काम का नहीं है, अपना घमंड है। थोड़े रोज़ में तुम देखेंगे। कुछ भी ले आवेंगे, उनकी चलन देख कहेंगे अच्छा अपने पास रख दो। देखेंगे लायक है तो साहुकार बना देंगे। लायक न है तो कहेंगे दरकार नहीं है। वण्डर खावेंगे ऐसे क्यों करते हैं! अरे, चाहिए ही नहीं। फेंक जाओ, हमारे काम में नहीं आवेंगे। बाबा के पास इस समय भी कोई भटके हुए आ जाते हैं। बाप जो इतना ऊँच बनाते हैं ऐसे बाप को धोखा दे फिर आ जाते हैं तो कहेंगे यह ट्रेटर बना था। धोखा दिया था। इनका कुछ भी लेना न है। भल यह गरीब बने। ऐसे–2 जिनको अपना अहंकार रहता था मनहूस रहते थे। कहेंगे मनहूस की दरकार नहीं। बाबा के हाथ में है ना–लेना वा न लेना। बाबा पैसे क्या करेंगे? दरकार ही नहीं। यह तो तुम बच्चों के लिए मकान बन रही हैं। 2/4 वर्ष की तो परवाह ही नहीं। आकर बाबा से मिलकर ही जाना है। सदैव तो रहना ही नहीं है। पैसे की क्या दरकार रहेगी। कोई लश्कर वा तोपें आदि तो नहीं चाहिए। तुम विश्व के मालिक बनते हो। अभी युद्ध के मैदान में हो। सिवाय बाप को याद करने के और कुछ तुम नहीं करते हो। बाप ने फरमान किया है मुझे याद करो तो इतनी शक्ति मिलेगी। यह तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। बाप है सर्वशक्तिवान। तुम उनके बनते हो। सारा मदार याद की यात्रा पर है। यहाँ तुम सुनते हो फिर उस पर मंथन चलता है। जैसे गाय घास खाती है फिर जुगाली करती है। मुख चलता ही रहता है। तुम बच्चों को भी कहते हैं ज्ञान की बातों पर खूब विचार करो। बाबा से हम क्या पूछें! बाप तो कहते हैं मन्मनाभव, जिससे ही हम सतोप्रधान बनते हैं। यह एम–ऑबजेक्ट सामने है। उन्हों की महिमा तो तुम जानते हो। सर्वगुण सम्पन्न..... यह ऑटोमैटिकली अन्दर में आना चाहिए। कोई की ग्लानि वा पाप कर्म कुछ भी न हो। यह याद करो। कोई भी तुमको उल्टा कर्म न करना है। नम्बरवन हैं यह देवी–देवताएँ। पुरुषार्थ से ही ऊँच पद पाया है ना। इन्हों के लिए ही गाया जाता है अहिंसा परमोधर्म देवी–देवता। किसको मारना भी हिंसा है ना। बाप समझाते हैं तो फिर बच्चों को अन्तर्मुख हो अपन को देखना है, हम ऐसे बने हैं? बाबा को याद करते हैं? कितना समय हम याद करते हैं? इतनी दिल गल(लग) जाए, कब भूले ही नहीं। कोई की आपस में मेल की फिमेल के साथ वा फिमेल की फिमेल के साथ वा मेल के मेल के साथ दिल लग जाती है तो बात मत पूछो। भूलते (ही) नहीं हैं। लैला–मजनू, हीर–रांझा का मिसाल है ना। सिर्फ एक/दो को देखते हैं। और कोई इच्छा नहीं। बैठे ..... उनको याद करते रहेंगे। बस, वह सामने खड़ा हो जावेगा। बाबा तो अनुभवी है ना। अभी बेहद का बाप कहते हैं तुम सभी आत्माएँ मेरे सन्तान हो। सो भी तुम अनादि सन्तान हो। वह है उन्हों की जिस्मानी याद। तुम्हारी तो है रूहानी। वह सिर्फ एक/दो को(के) शरीर को याद करते हैं और वह सामने खड़े हो जाते हैं। जैसे सा॰ होता है फिर गुम हो जाता। वैसे वह भी सामने आ जाते हैं, उसी खुशी में ही खाते–पीते याद करते (र)हते हैं। तुम्हारी इ(स) याद में बहुत बल है। एक बाप को ही याद करते रहेंगे और तुमको अपना भविष्य भी याद आवेगा। विनाश (का) सा॰ भी होगा। आगे चलकर जल्दी–2 विनाश का सा॰ होगा। फिर सभी को तुम कह सकेंगे, अभी विनाश होता है। बाप को याद करो। बाबा ने भी सभी कुछ छोड़ दिया ना। कुछ भी पिछाड़ी में याद न आए। हम तो अभी अपनी राजधानी में चले। नई दुनिया में तो ज़रूर जाना ही है। योगबल से सभी पापों को भस्म करना है। इसमें ही मेहनत करनी है। बड़ी मेहनत है। घड़ी–2 बाप को भूल जाते हैं; क्योंकि यह बड़ी महीन चीज़ें हैं। मिसाल जो देते हैं सर्प का, भ्रमरी का वह सभी इस समय के हैं। भ्रमरी कमाल करती है ना। उनसे तुम्हारी कमाल जास्ती है। वह तो जानवर है। उनकी कमाल दिखलाते हैं, विष्टा के कीड़ों को कैसे आप समान बनाती है। तुम भी ब्राह्मण हो। बाकी सभी मनुष्य हैं विष्टा के कीड़े। बाप को भूले हुए हैं। पतित कीड़े मनुष्य को तुम देवता बनाते हो। बाबा लिखते हैं ना ज्ञान की भूं–2 करते रहो। आखरीन जाग पड़ेंगे। जावेंगे कहाँ? तुम्हारे पास ही आते जावेंगे। एड होते जावेंगे, तुम्हारा नामाचार होता जावेगा। अभी तो तुम थोड़े हो ना। आर्यसमाजियों का दयानंद भी पहले अकेला था। फिर बाद में वृद्धि हुई है। बहुतों को आप समान बनाना होगा। फिर .....

आदि निकली होगी। शास्त्र तो पीछे बनते हैं। ग्रंथ के पहले वाणी हाथ से लिखी हुई थी। फिर बहुत सिक्ख लोग हुए होंगे तब ग्रंथ बनाया है। पढ़ने वाले भी जब इतने हो ना। बाबा को अनुभव है। ग्रंथ उठाकर रखते थे। पहले हाथ के अक्षर थे। फिर छापे का बना है। एडिशन होते–होते कितना बड़ा हो गया है। गीता तो उनसे भी छोटी लॉकेट मिसल बनाते हैं। वास्तव में है तो वह भी नहीं। गले में पहनने की चीज़ ही नहीं। कुछ भी तुमको पढ़ने का नहीं है। सिर्फ बाप को याद करना है। अजपा याद इसको कहा जाता है याद की यात्रा। आवाज़ की भी दरकार नहीं। दिल में याद करो। जैसे मैं बीजरूप हूँ, मेरे में सारी झाड़ की नॉलेज है, तुम्हारे में भी सारे झाड़ की नॉलेज होनी चाहिए। सारा चक्र भी बुद्धि में आ जाता है। झाड़ भी आ जाता है। कितना सहज है। बाप से सेकण्ड में मुक्ति–जीवनमुक्ति दोनों ही मिलती है और सभी को मिलनी है। बाबा कहते हैं सभी .....गे अखबारों द्वारा। सभी जागेंगे। उन्हों का ऐसा प्रबंध है। अखबार तो सभी जगह जाती है ना। तो तुम्हारा आवा.... भी सारे भारत में होगा। अभी तुम सन्यासियों को भी नहीं जीत सकते हो। अभी ही रिवोल्यूशन हो जाए। सभी मनुष्य तुम्हारे पास आकर गिरे। बाप में कशिश तो बहुत होती है ना। सतोप्रधान प्योर बन जाते हैं। तो पावन खैंचती है। चकमक के सामने जैसे सूई रखी जाती है तो खैंच लेती है। अभी तुमको कितनी शक्ति मिलती है। तुम जानते हो बाप को याद करते–2 हम जाकर विश्व का मालिक बनेंगे। ब्राह्मण वृद्धि को पाते रहेंगे। जब बहुत हो जावेंगे फिर तुम्हारा आवाज़ होगा। मुख्य बात तो एक पक्की रखनी है। बाप के सिवाय और कोई की याद न आए। देह भी याद न आए। अपन को आत्मा समझो तो तुम पावन बनकर अपने घर शांतिधाम चले जावेंगे। इस याद का नाम यात्रा ठीक रखा हुआ है। दो प्रकार का योग होता है यह तुम जानते हो। भारत का प्राचीन राजयोग कौन सा था यह कोई भी नहीं जानते। सन्यासी तो हैं हठयोगी। निवृत्तिमार्ग वाले। वह राजयोग सिखला कैसे सकते हैं, प्रवृत्तिमार्ग कैसे स्थापन कर सकते? वह धर्म ही अलग है। वह तो बाद में आते हैं। वह प्रवृत्तिमार्ग का राजयोग सिखला न सकें। निवृत्तिमार्ग, प्रवृत्तिमार्ग का भी उनको पता नहीं पड़ता है। कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं। वह सभी हैं शरीर के तंदुरुस्ती के लिए। हठयोग ऐसे करते हैं जैसे कि पहलवान बन जाते हैं। तुमको वह नहीं करना है। हठयोग में अनेक प्रकार की ड्रिल आदि सीखते हैं। यह तो तुमको उठते–बैठते–चलते बाप को याद करना है। बहुतों को सा॰ भी होता रहेगा। कहाँ–2 के राजाएँ होंगे वह भी सा॰ होगा। वहाँ भी राजाओं के ड्रेस भिन्न–2 होते हैं। जो पास्ट हुआ वह फिर रिपीट होगा। बाप कहते हैं रूहानी बच्चों मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। खाद निकल जावेगी। योगबल से ही तुम (विश्व) के मालिक बन सकते हो। वह दोनों अगर मिल जाए तो विश्व पर राज्य कर सकते हैं; परन्तु लॉ नहीं कहता। वह लोग भी कहते हैं, वह दोनों चाहे तो शांति करें, चाहे तो विनाश करें। है तो दोनों आपस में भाई–2; परन्तु उन्हों को आपस में मिलने का नहीं है। अगर दोनों आपस में मिल जाएं तो दोनों कहें हम विश्व पर राजाई करते हैं बॉम्ब्स लेकर, रेडिओ वा टेलीविज़न पर खबर दे, हम विजय पाते हैं, सफेद झंडा उठाओ, नहीं तो मारे जावेंगे। खुदा दोस्त की भी कहानी है ना। है भी अभी की बात। तुमको एक सेकण्ड में राजाई मिलती है। 21 जन्मों का सुख मिलता है। तुम बच्चे कितनी मीठी–2 बातें सुनते हो। फिर ऊँच पद पाने लिए यह पुरुषार्थ करना है। एक तो याद करो। दूसरा फिर आप समान बनाकर औरों को रास्ता बताओ। अंधों की लाठी बनना है। बोलो– अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, तो स्वर्ग में पहुँच जावेंगे। अंधा अर्थात् ज्ञान नहीं है। तुम फील करते हो हम भी अंधे थे, बाप को जानते ही नहीं थे। तो देखने की भी बात दूर रही। तो अभी बच्चों को अन्तर्मुख होना है, बाप को याद करना है तो पाप कट जाएं। माया बड़ी कड़ी है। सरण और बाज होता है ना। बाज तो बहुत ताकत वाला तीखा होता है। ऐसे तीखे जानवर को भी हाथ कर लेते हैं। शेरों को भी हाथ कर आजकल जीप में घुमाते हैं। हमारा इन सभी बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।